**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157**
**Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 221-223**

# भारतीय शिक्षक शिक्षा की स्थिति : विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के संदर्भ में

**अजीत कुमार यादव**
शोधार्थी, आर0 बी0 एस0 कालेज, आगरा, उत्तर प्रदेश भारत।

**सारांश**
यह सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति राष्ट्र समाज के विकास की संजीवनी है। शिक्षा का सम्बन्ध केवल साक्षर बनाने से नहीं बल्कि व्यक्ति को आत्मनिर्भर, भावनात्मक एवं प्रज्ञाशील बनाने से है। ऐसी स्थिति में एक योग्य शिक्षक ही योग्यतम् उत्पादन कर सकता है। जिसमें उत्तम शिक्षण विधियों, सहायक उपागम के प्रयोग की प्रभावशाली जानकारी एवं योग्यता हो, इस गुण को धारण करने के लिये शिक्षकों को भी व्यापक शिक्षण एवं प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रमों से होती है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने 2000 में यह तय किया कि शिक्षा मानवाधिकार है और योग्य शिक्षा पाने का सभी को अधिकार है। ऐसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये हमें व्यापक प्रयास करने होंगे और अपने अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को और भी व्यापक, सरल, लचीला और सर्वसुलभ बनाना होगा जिससे विश्वविद्यालय हो या महाविद्यालय सभी जगहों पर योग्य शिक्षकों के माध्यम से शिक्षण कार्य सम्पादित किया जाये। वर्तमान परिस्थितियों में कहीं न कहीं हम स्थापित मानकों को पूर्ण करने में सफल नहीं हुये हैं जिसके कारण शिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक विसंगतियां फैल गयी है। जिसको आगे शोधार्थी द्वारा पत्र में उजागर किया गया है।

**मूल शब्द :** शिक्षा, शिक्षक, आत्मनिर्भर, भावनात्मक, प्रज्ञाशील, मानवाधिकार।

## प्रस्तावना
राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो अपनी सशक्त भूमिका से समाज को परिष्कृत और परमार्जित करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति, परिवार, परिवेश के साथ–साथ राष्ट्र का भी विकास होता है, किन्तु विगत वर्षों की स्थिति के अवलोकन से यह तथ्य सामने आए है कि भारत में उच्च शिक्षा के संदर्भ में स्थिति काफी निराशाजनक है। विश्वविद्यालय सर्वेक्षणों के बाद यह तथ्य सामने आए है कि ''रन आफ द मिल'' अर्थात् पूर्व निर्धारित ढर्रे पर शिक्षित स्नातक बेरोजगारी को बढ़ाने से अच्छा है कि वर्तमान में ऐसी प्रवृत्तियों को त्याग कर भारत के लगभग 12 करोड़ लोगों की आवश्यकताओं जिनकी आयु 23 वर्ष के मध्य है उन्हें ज्ञान और कौशल से शिक्षित किया जाए तो वह अपने बूते पर धनोपार्जन कर सकेंगे। उच्च शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट 18 से 23 वर्ष की आयु के लोगों पर ही केन्द्रित है। जिनका मुख्य उद्देश्य समान नामांकन दर, लिंग समानता, शिक्षक छात्र अनुपात, विश्वविद्यालयों कालेजों एवं एकल संचालित संस्थानों की संख्या आदि का पता लगाकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न विसंगतियों को दूर करना है।

## उच्च शिक्षा सर्वेक्षण 2014–15
छठवीं अखिल भारतीय स्तर पर उच्च शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट 2014–15 के अनुसार वर्ष 2010–11 के 13.4 प्रतिशत की तुलना में 2014–15 में सकल नामांकन अनुपात 23.6 प्रतिशत रहा है। जिसे वर्ष 2020 तक 30 प्रतिशत करने का लक्ष्य है। यह सर्वेक्षण देश के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में किये गये और संस्थानों का वर्गीकरण करते हुये विश्वविद्यालय स्तर, कालेज स्तर और एकल संस्थान के स्तर पर विभक्त किए गए हैं। इस रिपोर्ट में 757 विश्वविद्यालय, 38056 कालेजो और 11922 एकल संस्थानों को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से सूचनाएं भेजने का प्रस्ताव किया गया था जिसमें 716 विश्वविद्यालयों 29506 कालेजों तथा 6837 एकल संचालित संस्थानों ने अपने आंकड़े प्रस्तुत किये और इन आंकड़ो से यह पता चला कि भारत में सर्वाधिक कालेजो की संख्या वाले 7 राज्य क्रमशः–उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और तेलंगाना है। उच्च शिक्षा में दूरस्थ माध्यम से इनरोलमेन्ट 11.7 प्रतिशत रहा जिसमें 46 प्रतिशत महिलाएं है। भारत में 112812 छात्र पी0एच0डी में नामांकित है जो कि कुल नामांकन के 0.39 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति के छात्रों का कुल नामांकन 13.4 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति छात्र कुल नामांकन 4.8 प्रतिशत है। 32.9 प्रतिशत छात्रों को अन्य पिछड़ी वर्ग में शामिल है। जिनमें 4.4 प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यक और 1.9 प्रतिशत अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के हैं।
देश उच्च शिक्षा में शिक्षकों की कुल संख्या 1418389 है। जिनमें 61 प्रतिशत पुरुष शिक्षक हैं और 39 प्रतिशत महिला शिक्षक है और आज भी छात्र शिक्षक अनुपात विश्वविद्यालयों और कालेजो में 24 का है।

## अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की स्थिति
डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार ''अध्यापक का समाज में स्थान महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक संस्कृतियों और तकनीकी कौशलो को पहुँचाने में मुख्य भूमिका अदा करता है और सभ्यता के दीपक को जलाए रखने में मदद करता है।'' ऐसी स्थिति में यह बहुत ही आवश्यक हो जाता है कि हमें अपने अध्यापक शिक्षा, पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है। इसकी वर्तमान स्थिति को जानकर, उसमें जो भी कमियों है, उन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

तलिका 1

| 1. शिक्षा सत्र | 1950.51 | 1960.61 | 1970.71 | 1980.81 | 1990.91 | 2000.01 | 2007.08 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2. प्रशिक्षण विद्यालयों की संख्या | 800 | 1150 | 1300 | 1600 | 1800 | 2000 | 2500 |
| 3. प्रशिक्षण स्तर पर प्रशिक्षिक अध्यापकों का प्रतिशत | 50 | 150 | 300 | 400 | 450 | 1000 | 3000 |
| 4. प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रतिशत | 60: | 70: | 75: | 80: | 85: | 90: | 92: |
| 5. माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रशित | 50: | 60: | 65: | 75: | 80: | 85: | 90: |

प्रस्तुत आंकड़े स्वतंत्रता के बाद भारत में अध्यापक शिक्षा का अनुमानित आंकड़ा है जो इस क्षेत्र में हो रहे प्रयासों को दर्शाता है। वर्तमान में NCTE का गठन 1993 में अध्यापक शिक्षा के लिये मील का पत्थर साबित हुआ अपने उद्देश्यों To achieve planned and coordinated development at teacher education system throughout the country to improving the standard and working at teacher education के माध्यम से वर्तमान 2014 में तीन नवीन पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया जिसमे, 4 वर्षीय (B.A. B.ED) (B. SCB. ED) 3 वर्षीय B.ed (Part-time) और B.ed, B.P. ed, M.ed के पाठ्यक्रम का समय को बढ़ाना भी गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम, योगा कार्यक्रम, समावेशी शिक्षा की तरफ भी NCTE ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। देश भर में 600 संस्थानों को केन्द्रीय सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है। जिसे 2020 तक बढ़ाकर 1000 करने की अनुसंशा है। DIET, CETE और IASE को वित्तीय समावेशन में लाने की कोशिश की जा रही है। वर्तमान में केन्द्रीय सरकार द्वारा चलाये जा रहे (SSA) प्रोग्राम के तहत सेवारत शिक्षकों को 20 दिनों, स्कूल शिक्षको को 60 दिन और अप्रशिक्षित शिक्षको को 30 दिन तक रिफ्रेशर कोर्स करवाया जा रहा है। NGOs की सहायता से शिक्षको के वित्तीय समस्याओं एवं संसाधनिक आवश्यकता की भी पूर्ति करने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में केन्द्र सरकार की एक महत्वपूर्ण महत्वाकांक्षी परियोजना पर NCTE कार्यरत है। जिसमें शिक्षको के लिये निर्देशन एवं परामर्श के साथ–साथ Fallow up Service की बात कही जा रही है। बहुत से सकारात्मक कार्य NCTE, NCF, SCERT, NCERT आदि के द्वारा शिक्षक शिक्षा के लिये किये जा रहे हैं, परन्तु अभी और बेहतर प्रयास करने की हमें जरूरत है और शिक्षा को अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक ले जाने की कोशिश होनी चाहिए।

## अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में उभरती चुनौतियाँ

जहाँ वर्ष 1950 में देश में मात्र 20 विश्वविद्यालय थे वही फरवरी 2017 तक इनकी संख्या बढ़कर 789 तक पहुँच गयी है वर्तमान में 47 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, 357 राज्य विश्वविद्यालय 207 निजी विश्वविद्यालय है, परन्तु अध्यापक शिक्षा की अवहेलना क्यों हो रही है। इसे समझना होगा, उच्च्तर शिक्षा से लेकर प्राथमिक स्तर तक समानता में सुधार, महिलाओं अल्पसंख्यकों और निशक्त जनों के समावेशन को प्रोत्साहन देना होगा।

सेवाकालीन अध्यापकों के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम, छात्राध्यापकों के विकास में दक्षता की आवश्यकता, सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों का ज्ञान, शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान आकलन व मूल्यांकन का ज्ञान एवं भविष्य परक नियोजन के ज्ञान की कमी ही उभरती चुनौतियां हैं। आधुनिक व्यवहार एवं उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के संदर्भ में मनोसामाजिक तथा सांस्कृतिक कारको के प्रभाव का आकलन और अध्यापक शिक्षा के माध्यम से नियंत्रणात्मक समन्वयन से सम्बन्धित चुनौतियां। अभिनव शिक्षण पद्धतियों, शिक्षण प्रतिमान तथा व्यूह–रचनाओं एवं सामान्य तथा विशिष्ठ शिक्षण कौशलों के अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनुपयोग की चुनौतियां, मात्रात्मक स्तर के साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक स्तर को बनाये रखने की चुनौतियां वर्तमान में अवस्थित है।

## अन्य महत्वूपर्ण समस्यायें

1. प्रवेश सम्बन्धी, शिक्षण अभ्यास के लिए विद्यालयों की कमी।
2. पाठ्यक्रम का अनुपयोगी होना।
3. परीक्षा प्रणाली उपयुक्त नही होना।
4. पठनीय सामग्रियों की समस्या।
5. प्रशिक्षार्थियों का नकारात्मक दृष्टिकोण।
6. अलगाववाद की समस्या।

समस्या चुनौतिया की आधार शिला है। इन्हीं चुनौतियों का सामना करने के लिये, स्वायत्त कालेजों के उन्नयन और कालेजों के सामूहिक परिवर्तन द्वारा नए विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाये, नए मॉडल कालेजों, नए व्यवसायिक कालेजों की स्थापना और विश्वविद्यालय द्वारा कालेजों को संरचनात्मक सहायता प्रदान करना होगा। शिक्षा संकाय भर्ती प्रक्रिया में शीघ्रता लाना होगा एवं संकाय सुधार कार्यक्रमों को चलाना होगा। कौशल विकास को आगे बढ़ाना और इसे अध्यापक शिक्षा की मूलभूत आवश्यकता बनानी होगी।

## निष्कर्ष

उपर्युक्त परिदृश्यों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आता है कि वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की स्थिति एक प्रयोग पर आधारित है और यह प्रयोग किस दिशा में जायेगा यह कह पाना बड़ा ही कठिन है। आंकड़ों के विश्लेषणों से यह पता चला है कि छात्रों के नामांकन की संख्या के अनुसार ना तो कहीं भी शैक्षिक वातावरण, स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक परिवेश, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, शिक्षकों का अभाव एवं वित्त की समस्या सर्वथा बनी हुई है।

जहाँ पर एक तरफ प्रशिक्षण एवं कौशलयुक्त शिक्षा की बात हो रही है। वहीं केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा किया जा रहा यह प्रयास बहुत ही कम है। शिक्षण–प्रशिक्षण की स्थिति दयनीय बनी हुई है। ऐसे में आर्थिक संसाधनों के निर्धारण हेतु यह आवश्यक है, कि प्रत्येक विश्वविद्यालय कालेजो, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित संस्थाओं का आधारभूत सर्वेक्षण कराकर यह निर्धारित किया जाए कि उनकी बुनियादी आवश्यकताएं कौन–कौन सी है और आवश्यकताओं के मुताबिक संसाधनों की सुलभता सुनिश्चित की जाए। वर्तमान में जो भी प्रयास किये जा रहे उसको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत एक बढ़ती आबादी वाला देश है। अतः छात्रों की आधारभूत संरचनाओं, शिक्षकों की स्थिति उपयुक्त बजट का आवंटन एवं गुणवत्ता पूर्ण कौशल के माध्यम से शिक्षक एवं छात्र दोनों को समायोजित करने का प्रयास होने चाहिये।

## संदर्भ ग्रन्थ

1. भट्टाचार्या, जे0सी0 (2015), अध्यापक शिक्षा, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन, सप्तम संस्करण।
2. सक्सेना, बी0के0 मिश्रा, आर0के0 मोहन्ती (2010) अध्यापक शिक्षा, मेरठः आर0लाल बुक डिपो।

3. दूबे, सत्य नारायण (2009), अध्यापक शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
4. श्रीवास्तव, एस0एस0 (1988), शिक्षा में नवाचार एवम् आधुनिक परिवर्तन, आगरा : हर प्रसाद भार्गव पब्लिकेशन।
5. श्रीवास्तव, आर0सी0 एवं बोस के0 (1973), थ्योरी ऑफ प्रैक्टिस ऑफ टीचर एजुकेशन इन इण्डियाः इलाहाबाद काग पब्लिकेशन।
6. Hymen, Rahald T. Contemporary thought an teaching, New Jersey: Prentice Hall Inc, Englewood cliffs, 1971.
7. सिंह जगदीश (2017), भारतीय उच्च शिक्षा की स्थिति : विश्वविद्यालयों के संदर्भ में, जौनपुर सोवेनियर, ऑफ नेशनल कान्फ्रेस : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनि0।
8. गुप्ता, एस0पी0 एवं अल्का गुप्ता (2010), आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें, इलाहाबाद, शरदा पुस्तक भवन।
9. Website-
10. www.ijsr.net
11. http://hall.handle.net/1880/50497
12. www.teindia.nic.in
13. http://www.jaurnals.elsenier.com
14. nete.india.org